Cambridge IGCSE

Cambridge International Examinations
Cambridge International General Certificate of Secondary Education

CANDIDATE NAME	

CENTRE NUMBER						CANDIDATE NUMBER					

7106830164

HINDI AS A SECOND LANGUAGE **0549/12**

Paper 1 Reading and Writing **May/June 2014**

2 hours

Candidates answer on the Question Paper.

No Additional Materials are required.

READ THESE INSTRUCTIONS FIRST

Write your Centre number, candidate number and name on all the work you hand in.
Write in dark blue or black pen.
Do not use staples, paper clips, glue or correction fluid.
DO **NOT** WRITE IN ANY BARCODES.

Answer **all** questions.

At the end of the examination, fasten all your work securely together.
The number of marks is given in brackets [ ] at the end of each question or part question.

The syllabus is approved for use in England, Wales and Northern Ireland as a Cambridge International Level 1/Level 2 Certificate.

This document consists of **13** printed pages and **3** blank pages.

DC (RW) 93605
© UCLES 2014

CAMBRIDGE
International Examinations

[Turn over

खंड 1

अभ्यास 1 प्रश्न 1–5

'हिवरे बाज़ार' पर निम्नलिखित आलेख पढ़िए तथा दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

हिवरे बाज़ार यानी गांधी के सपनों का गांव। एक ऐसा गांव, जहां खुशहाल हिन्दुस्तान की आत्मा निवास करती है। यह गांव बाज़ारवाद के युग में मशाल का काम कर रहा है। क्या वैसे दिन की कल्पना की जा सकती है, जब देश के सात लाख गांव हिवरे बाज़ार की तरह होंगे। आर्थिक मंदी से इन दिनों दुनिया परेशान है। भारत सरकार भी चिंतित है। पर देश का एक गांव मज़े में है। वहां के लोगों का इससे कोई सरोकार नहीं। वे रोज़गार के लिए पलायन नहीं करते। गांव में रोज़ाना स्कूल की कक्षा लगती है। आंगनवाड़ी रोज़ खुलती है। अनाज की दुकान भी ग्राम सभा के निर्देशानुसार संचालित होती है। सड़कें इतनी साफ कि आप वहां कुछ फेंकने से शर्मा जाएंगे। एक ऐसा गांव जिसे जल संरक्षण के लिए 2007 का राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिल चुका है।

इस गांव की सत्ता गांव के लोगों द्वारा ही संचालित की जाती है। पर महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले के हिवरे बाज़ार गांव जाएंगे तो आप इस सच को अपनी आँखों से देख पाएंगे। गांधी के सपनों के भारत को जान और समझ पाएंगे। एक शब्द में यह भी कहा जा सकता है कि हिवरे बाज़ार उनके ग्राम स्वराज का प्रतिनिधित्व करता है। आज से 20 वर्ष पहले यानी सन 1989 में इस उजाड़ से गांव को 30–40 पढ़े-लिखे नौजवानों ने संवारने का बीड़ा उठाया। गांव वालों ने उन नौजवानों को पूरा सहयोग दिया। अब देखिए साहब, गांव के नज़ारे ही बदल गए हैं। बंजर ज़मीन उपजाऊ हो गई है। एक फसल की जगह दो-दो फसल उगा रहे हैं। गांव के लोगों ने अपने प्रयास से गांव के आसपास 10 लाख पेड़ लगाए। इससे भू-जल स्तर ऊपर आया है और मिट्टी में नमी बढ़ने लगी है। पहले यहां लोगों की औसत आमदनी प्रतिवर्ष 8000 रुपये थी। अब 28000 रुपये हो गई है।

हिवरे बाज़ार गांव में अनाज ग्रामसभा के निर्देशानुसार सभी ज़रूरतमंदों को दिया जाता है। अनाज बंटवारे की आदर्श व्यवस्था ने अतिरिक्त अनाज के भंडार बढ़ाए हैं। गांव के पोपट राव कहते हैं, बाहरी लोगों की नज़र हमारे गांव की ज़मीन पर है। अतः हमलोगों ने नियम बना रखा है कि ज़मीन गांव से बाहर के किसी व्यक्ति को नहीं बेची जाएगी। गांधी के गांव का जरा रंग देखिए ! यहां सभी ग्रामीण सांप्रदायिक सौहार्द के साथ रहते हैं।

© UCLES 2014

1 बाज़ारवाद के इस युग में मशाल का काम कौन कर रहा है?

....[1]

2 गांव में किस तरह की सुविधाएं उपलब्ध है? किन्हीं दो सुविधाओं के बारे में लिखिए।

(i) ....[1]

(ii) ....[1]

3 हिवरे बाज़ार गांधी जी के किस विचार को दर्शाता है?

....[1]

4 पेड़ लगाने से क्या लाभ मिला है?

....[1]

5 गांव की ज़मीन् गांव में ही रहे इसके लिए क्या कदम उठाया गया है?

....[1]

[अंक:6]

© UCLES 2014

अभ्यास 2 प्रश्न 6

गणतंत्र दिवस परेड में लोकनृत्य मंडली के सदस्य बनकर शहर की परेड में शामिल होने के अवसर का लाभ उठाइए

लोकनृत्य आयोजन समिति,

शास्त्री भवन, नई दिल्ली।

दूरभाष 2489903539, 2579375559

मासिक कार्यशाला का सदस्य बनने के लिए आवेदन पत्र भेजिए।

प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी लोकनृत्य प्रदर्शन के लिए स्कूली बच्चों के आवेदन पत्र मंगवाए जा रहे हैं। सभी चयनित आवेदकों को आयोजन समिति निःशुल्क एक महीने तक कार्यशाला में नृत्य का प्रशिक्षण देगी। कृपया इच्छुक आवेदक अपना आवेदन 15 अक्टूबर तक भेजें। आवेदन पत्र ई-मेल से भी भेजा जा सकता है। ई-मेल पता है:-
republicday@hrd.org

शबाना की उम्र 15 वर्ष है और वह पिछले 3 वर्षों से शास्त्रीय नृत्य भरतनाट्यम सीख रही है। भविष्य में वह स्वंय एक दक्ष नृत्यांगना बनना चाहती है। वह चाहते हुए भी कभी कोई लोकनृत्य नहीं सीख पाई। उसके आस-पास अधिकतर शास्त्रीय नृत्य सिखाने वाले लोग ही हैं। क्योंकि लोकनृत्य सिखाने वाला कोई अध्यापक नहीं है। शबाना सप्ताह के दौरान स्कूल जाती है इसलिए दूसरी किसी सांस्कृतिक गतिविधि के लिए 1 बजे से समय दे सकती है। सप्ताह में दो बार वह भरतनाट्यम की कक्षा के लिए जाती है। वह भरतनाट्यम की मंच प्रस्तुति भी कर चुकी हैं। शबाना दिल्ली के मयूर विहार क्षेत्र में बने समाचार अपार्टमेंट के मकान न. 233 में रहती हैं। उनका टेलिफोन न. 2439493839 शबाना का ई-मेल पता है - Sk21@indi.com

आप अपने को शबाना मानकर नीचे दिए गए आवेदन पत्र को भरिए।

लोकनृत्य आयोजन समिति,
शास्त्री भवन, नई दिल्ली।
दूरभाष 2489903539, 2579375559

आवेदक का नाम .....शबाना......

(सही का निशान लगाएं) आयु - 14–15 ☐ 16–17 ☐ 18–19 ☐

ईमेल - ....

पूरा पता - ....
....

शहर - ....

दूरभाष - ....

निम्नलिखित अवधियों में से उचित अवधि चुनें। [कोष्ठक में सही का निशान लगाएं]

☐ सुबह 10 बजे से 1 बजे तक

☐ दोपहर 3 बजे से रात 7 बजे तक

नृत्य संबंधी अनुभव बताइए

....

....

....

[अंक:7]

अभ्यास 3 प्रश्न 7–9

'फिल्म वितरण में आने वाले बदलाव' शीर्षक से निम्नलिखित लेख पढ़िए।

आज फिल्मों का अर्थशास्त्र व्यवहारिक रूप में बड़े निर्माताओं के इर्दगिर्द सिमट गया है। स्वतंत्र निर्माताओं के लिए अपनी फिल्म सिनेमा में दिखाना लोहे के चने चबाने जैसा होता है। लेकिन भविष्य में सामाजिक मीडिया के मंच इस स्थिति को बदल सकते हैं। यू ट्यूब ने फिल्मों के प्रदर्शन के लिए बॉक्स ऑफिस चैनल की शुरुआत की है, जहां जल्द छोटे बजट की कई फिल्में दिखाई जा सकती हैं। फिल्म के ऊपर लगे विज्ञापनों से होने वाली आय निर्माता और यू ट्यूब के बीच बांटे जाने की व्यवस्था है। 'याहू' ने भी भारतीय फिल्मों के लिए नेट पर अपना अलग चैनल शुरू किया है।

'डिब्बा बंद' फिल्में यानी वे फिल्में, जो या तो पूरी होने के बावजूद वितरकों के न खरीदे जाने से दर्शकों तक नहीं पहुंच पायीं या आखिरी मौकों पर वित्तीय प्रबंध न होने के चलते अधूरी रह गईं। बिना नामी नायक के विदेशों में फिल्म बेचना ख़ासा मुश्किल है, सो 'यू ट्यूब' विकल्प बना।

सामाजिक मीडिया के मंच नए फिल्मकारों के लिए हुनर प्रदर्शन का बेहतरीन ज़रिया बन कर उभरे हैं। कुछ गंभीर और अलग कोशिशें भी हो रही हैं। कुछ बड़े निर्देशक जैसे अमृत गोस्वामी लगातार फिल्म छात्रों से कहते भी हैं कि फिल्म बनाओ और 'यू ट्यूब' जैसे मंचों के ज़रिए दुनिया तक पहुंचाओ। सामाजिक मीडिया की लोकप्रियता की वजह से आने वाले दिनों में टी.वी. धारावाहिक और अंतर्जाल प्रस्तुतियों का उभार भी ज़ोर पकड़ेगा। इसकी शुरुआत हो चुकी है। कुछ दिनों पहले सामाजिक जगत जाल साइट 'आईबीबो' पर वेब धारावाहिक 'द हंट' प्रसारित हुआ। इस रोमांचक कहानी में काम करने वाले कलाकारों से लेकर पटकथा लेखक और निर्देशक तक सभी सामाजिक जगत जाल पर ऑनलाइन प्रस्तुति के ज़रिए चुने गए हैं। आधुनिक किंतु सस्ते कैमरों से लेकर कंप्यूटर पर संपादन की सरल प्रकिया जैसी सर्व सुलभ तकनीक निरंतर फिल्म निर्माण को सरल बना रही है। सामाजिक मीडिया इसके सहायक की तरह फिल्म के कारोबार का गणित बदलने को तैयार है।

अभ्यास 3 प्रश्न 7–9

आपको स्कूल पत्रिका के लिए सामाजिक मीडिया की भूमिका पर एक निबंध लिखना है अपने निबंध के लिए 'फिल्म वितरण में आने वाले बदलाव' नामक लेख में से नीचे दिए गए प्रत्येक शीर्षक के अंतर्गत टिप्पणियां लिखें जिसपर आपका निबंध आधारित हो

7 **(a)** कौन सी कंपनियां कम बजट की फिल्मों को मंच प्रदान करने के लिए आगे आई हैं

- ....[1]
- ....[1]

(b) आय वितरण के लिए क्या विकल्प सामने रखा गया है?

- ....[1]

8 किन कमियों के फलस्वरूप फिल्में सिनेमा घरों तक नहीं पहुंच पाईं?

- ....[1]
- ....[1]

9 सामाजिक मीडिया की सफलता से भविष्य में किस तरह के परिवर्तन सामने आएंगे?

- ....[1]
- ....[1]

[अंक:7]

अभ्यास 4 प्रश्न - 10

निम्नलिखित आलेख के आधार पर सारांश लिखिए जिसके द्‌वारा शीर्षक 'बच्चों से न छीनें उनका हक' निबंध की बातें शामिल की जा सकें।
आपका सारांश 100 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।
संगत बिन्दुओं के समावेश के लिए 6 अंक और भाषिक अभिव्यक्ति के लिए 4 अंक निर्धारित हैं। पाठांश से वाक्य उतारना उचित नहीं है।

ओलंपिक पदक जीतने के बाद आयोजित किए जा रहे स्वागत समारोहों के कारण मैं देश के महानगरों जैसे दिल्ली, मुंबई, बेंगलूरू, कोलकाता आदि में घूम रही हूं। इन महानगरों में पहुंच कर दिल बैठ सा जाता है। क्योंकि मैं भारत के जिस क्षेत्र से आती हूं वहां तो खुली जगहों की कोई कमी नहीं है। प्रकृति के साथ नाता जोड़ने के अवसरों का भी कोई अभाव नहीं है। लेकिन इन महानगरों में मैंने देखी ऊंची-ऊंची इमारतें, तंग गलियां, गंदगी भरे रास्ते, प्रदूषित जलवायु और बड़ी ही मुश्किल से दिखाई देने वाले खुले मैदान और स्थान। इन महानगरों में मुझे ज़्यादातर मिला लगभग दम घोंट देने वाला माहौल, जहां हम जैसे खुले-खुले स्थानों से आने वालों के लिए सांस तक लेना मुश्किल हो जाता है।

यह निराशाजनक है कि महानगरों में बच्चों के खेलने की जगह निरंतर सिकुड़ती जा रही है। हर खुली जगह पर धीरे-धीरे बड़ी-बड़ी इमारतें खड़ी की जा रही हैं। इस सिलसिले को रोकने की आवश्यकता है। औद्‌योगिक अथवा शहरी विकास की गतिविधियों के लिए खेल के स्थानों से समझौता करना ठीक नहीं है। बचपन का तो नाम ही होता है उछल-कूद करके धमाचौकड़ी मचाना, ताकि बच्चों में जो ढेर सारी ऊर्जा होती है उसका सही इस्तेमाल करके उनका सही-सही शारीरिक विकास हो पाए। अगर बच्चों को खुले में खेलने का अवसर ना मिले तो वे या तो टीवी से चिपके रहते हैं या फिर वीडियो गेम में उलझे रहते हैं। इसके अलावा खुले में खेलने से बच्चों को प्रकृति से जुड़ने का मौका मिलता है। प्रकृति ही मानव जाति की सब से अच्छी शिक्षक रही है।

अब अगर आज के शहरों को देखें तो मालूम होगा कि बच्चे यह जानते ही नहीं कि सेब के बाग़ कैसे होते हैं। आम के पेड़ कैसे होते है या फिर अनार कहां लगते हैं? यह अच्छी बात है कि हम खेलों में एक शक्ति बनने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन यह तभी होगा जब हम बच्चों को खेलने की मूलभूत सुविधाएं देंगे। इन सुविधाओं में पहली ज़रूरत तो खेलने की जगह की है। अगर उन्हें खेलने की जगह ही नहीं मिलेगी तो वे किस तरह खेलों की दुनिया की ओर आकर्षित होंगे और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कार-सम्मान हासिल कर सकेंगे?

© UCLES 2014

'बच्चों से न छीनें उनका हक'

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

[अंक: 10]

© UCLES 2014

[कृपया पृष्ठ उलटें]

खंड 2

अभ्यास 5 प्रश्न 11–17

निम्नलिखित आलेख को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

बॉलीवुड ने मोरक्को के अब्दुल को भारत-भक्त बनाया

जमा एल फना मराकश जगह का ख़ास आकर्षण है। यहाँ दिन में खामोशी छायी रहती है। लेकिन सूरज ढलते ही यहाँ मेले जैसा माहौल बन जाता है। शाम होते ही यहाँ ठेले वाले ठेलों पर हर तरह का सामान बेचते हैं। नाचने वाले, मदारी, फेरी वाले और ढाबे वाले सभी यहाँ इस मेले का हिस्सा बन जाते हैं। ढाबों में गरमा-गरम कबाब के अलावा मोरक्को की मशहूर ताजीन और खुसखुस मिलती हैं। इन ढाबों के बैरे भी उतने ही मज़ेदार हैं जितने कि यहाँ के कबाब। लगभग सभी बैरे हिंदी गानों और फिल्मों के दीवाने हैं और टूटी-फूटी हिंदी बोल लेते हैं।

लेकिन एक बैरा इन सबसे निराला है - अब्दुल्लाह जिसे उसके साथी अब्दुल के नाम से बुलाते हैं। यह कोई मामूली बैरा नहीं है। यह बॉलीवुड फिल्मों की जानकारी का चलता-फिरता इनसाक्लोपीडिया है। पिछले 25 सालों में बनने वाली फिल्मों और उनके गानों के अलावा यह मोहम्मद रफ़ी और किशोर कुमार के बारे में सब कुछ जानता है।

हर तर्क और हर परिस्थिति के लिए उनके पास एक हिंदी गाना मौजूद है। हिंदी फिल्मों के कारण वह भारत का भक्त भी बन गया है। वह कहता है, "मेरे भाई, मैं भारत कभी नहीं गया, लेकिन भारत से बहुत प्यार है। भारतीयों से प्यार है। भारतीय सभ्यता मुझे बहुत पसंद है।" वह भारतीय संस्कृति से बहुत प्रभावित है। ये जताने के लिए वह एक- दो दोहे भी सुना देता है। "हिंदी फिल्मों ने मुझे भारतीय संस्कृति के बारे में काफी बताया। यह भजन सुनिए।" वह भजन भी बड़े लगन के साथ गाता है।

अब्दुल की बॉलीवुड की दीवानगी काम पर ही ख़त्म नहीं होती। वह घर जाकर भी बॉलीवुड के बारे में सोचता है। अब्दुल ने अपनी बीवी और पांच साल की बेटी जैनब को भी बॉलीवुड का दीवाना बना दिया है। घर में प्रवेश करने पर दीवार पर एक ताजमहल की एक फोटो लगी है जिसे आप नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते। जब अब्दुल की बीवी से पूछा -आप इनकी बॉलीवुड की दीवानगी से बोर नहीं हो जातीं? वो कहने लगीं: "जब वो काफी गहराई से बॉलीवुड में डूब जाते हैं तो मैं तंग हो जाती हूँ।" लेकिन वह अब्दुल से शिकायत नहीं करती।

पैंतीस वर्षीय अब्दुल अब एक धर्मनिरपेक्ष इंसान है। उसे यह बात बहुत पसंद है कि भारत में हर संस्कृति के लोग मिल-जुल कर रहते हैं। बॉलीवुड ने अब्दुल की सोच बदल दी है। वह कहता है, “पहले वह ज़्यादा मिलनसार नहीं था। हिंदी फिल्मों में आपसी भाईचारगी और हर संस्कृति की इज्ज़त देखकर मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ।” यह है बॉलीवुड का असर।

कृपया प्रश्न 11 से 14 तक के उत्तर सही या ग़लत के कोष्ठक में ✓ का निशान लगाकर दीजिए। यदि वाक्य ग़लत है तो उसे पाठांश के आधार पर ठीक कीजिए ध्यान रहे कि परीक्षार्थी को पाठांश के वाक्यों की नकल करने की अनुमति नहीं है।

	सही	ग़लत
उदाहरण - ढाबों में गरमा-गरम कबाब के साथ हिंदुस्तानी खाना मिलता है।	☐	✓
औचित्य - ढाबों में गरमा गरम कबाब के अलावा मशहूर ताजीन और-खुसखुस मिलती है।		
11 सभी बैरे हिंदी गानों के दीवाने हैं और फर्राटे से हिंदी बोलते हैं।	☐	☐
12 अब्दुल मोहम्मद रफ़ी और किशोर कुमार के सिवाय सभी फिल्मी कलाकारों के बारे में जानता है।	☐	☐
13 भारत जा चुके अब्दुल को भारतीय सभ्यता बहुत पसंद है।	☐	☐
14 अब्दुल मानते हैं कि हिंदी फिल्मों से उसे भारतीय संस्कृति के बारे में काफी जानकारी मिली है।	☐	☐

अब निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

15 अब्दुल ने अपने ऊपर भारतीय संस्कृति के प्रभाव को सिद्ध करने के लिए क्या किया?

....[1]

16 क्यों कहा गया कि अब्दुल की बॉलीवुड की दीवानगी काम पर ही समाप्त नहीं होती?

....[1]

17 किस बात ने अब्दुल को मिलनसार बनाया?

....[1]

[अंक:10]

© UCLES 2014

अभ्यास 6 प्रश्न 18

क्या संयुक्त परिवार का महत्व घट रहा है?

आपके स्कूल में एक वाद विवाद प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है जिसका विषय है-'क्या संयुक्त परिवार का महत्व घट रहा है? आप इस प्रतियोगिता में हिस्सा लेना चाहते हैं। अपने विचारों को विषय के पक्ष या विपक्ष में प्रस्तुत करने के उद्देश्य से उत्तर लिखिए।

आपकी प्रस्तुति 150 से 200 शब्दों से अधिक नहीं होनी चाहिए।
लिखित प्रस्तुति पर अंर्तवस्तु के लिए 10 अंक तथा सटीक भाषा के लिए 10 अंक दिए जाएंगे।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

© UCLES 2014

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

.... [अंक: 20]

© UCLES 2014

BLANK PAGE

© UCLES 2014

BLANK PAGE

© UCLES 2014

BLANK PAGE

Permission to reproduce items where third-party owned material protected by copyright is included has been sought and cleared where possible. Every reasonable effort has been made by the publisher (UCLES) to trace copyright holders, but if any items requiring clearance have unwittingly been included, the publisher will be pleased to make amends at the earliest possible opportunity.

Cambridge International Examinations is part of the Cambridge Assessment Group. Cambridge Assessment is the brand name of University of Cambridge Local Examinations Syndicate (UCLES), which is itself a department of the University of Cambridge.